(42)

एम.एच.डी

# एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

## द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
## (जुलाई 2011 एवं जनवरी 2012 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी-14 : हिंदी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी-15 : हिंदी उपन्यास-2
एम.एच.डी-16 : भारतीय उपन्यास

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

# सत्रीय कार्य-2011-12

कार्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित सातों पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

**एम.एच.डी.-1 : हिंदी काव्य-1**
**एम.एच.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना**
**एम.एच.डी.-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान**
**एम.एच.डी.-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास**
**एम.एच.डी.-14 : हिंदी उपन्यास-I (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)**
**एम.एच.डी.-15 : हिंदी उपन्यास-II**
**एम.एच.डी.-16 : भारतीय उपन्यास**

एच.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4-4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यकम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए "विवेचना" नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एम.एच.डी-1 में "विविधा" नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

**उद्देश्य** : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

**निर्देश** : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

---

अनुक्रमांक : .....
नाम : .....
पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....
सत्रीय कार्य कोड : .....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

---

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।

7. सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक के पास **जुलाई 2011 सत्र के लिए 31 मार्च 2012 एवं जनवरी 2012 सत्र के लिए 30 सितंबर 2012** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।
2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें। आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा, शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

**नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।**

# एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

## सत्रीय कार्य

## (पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-1/टीएमए/2011-12

कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए:** **10×4=40**

क) पीछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगे थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।
दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुणां, बहुरि न आवौं हट्ट।
कबीर गुरु गरवा मिल्या, रलि गया आटे लूँण।
जाति-पाँति-कुल सब मिटै, नाँव धरौगे कौंण।

ख) तू दयालु, दीन हौं, तु दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंज-हारी।।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो?
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो।।
ब्रह्म तू, हौं जीव तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितू मेरो।।
तोहिं-मोंहि नाते अनेक मानिये जो भावै।
ज्यों-त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै।

ग) माई साँवरे रंग राची। टेक।।
साज सिंगार बाँध पग घूंघर, लोकलाज तज नाची।
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ सँगत श्याम प्रीत जग साँची।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची।
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची।
मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची।।

घ) कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है।
कहै पद्माकर परागन में पौनहू में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वारे में दिसान में दुनी में देस देसन में,
देखौ दीपदी पन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में,
बनन में बागन में बगर्‌यो बसंत है।

2. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए:** **15 x 3 = 45**

क) कवि के रूप में विद्यापति का मूल्यांकन कीजिए।

ख) भक्ति काव्य परम्परा में सूरदास का महत्व बताते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

ग) जायसी के 'पद्मावत' में लोक और अध्यात्म की द्वंद्वात्मक स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

3. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए:** **5 x 3 = 15**

क) 'पृथ्वीराज रासो' में प्रयुक्त कथानक रूढ़ियों पर विचार कीजिए।

ख) कबीर काव्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

ग) बिहारी के काव्य में निरूपित शृंगारिकता का वैशिष्ट्य बताइए।

# एम.ए.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना

एम.एच.डी.-5, एम.म. हिंदी के द्वितीय वर्ष का अनिवार्य पाठ्यक्रम है। 'साहित्य सिद्धांत और समालोचना' शीर्षक इस पाठ्यक्रम में आपने प्राचीन भारतीय साहित्य-चिंतन, पश्चिमी साहित्य चिंतन और हिंदी ओलोचना का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

इस सत्रीय कार्य में आपको कुल नौ प्रश्न करने हैं - आठ निबंधात्मक प्रश्न तथा एक टिप्पणीपरक प्रश्न। टिप्पणीपरक प्रश्न में आपको चार विषयों पर टिप्पणियाँ लिखनी हैं। आपकी सत्रांत परीक्षा का ढाँचा भी कुछ हद तक इसी प्रकार का होगा। फर्क केवल इतना है कि यहाँ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, जबकि सत्रांत परीक्षा में आपके पास विकल्प होगा यानी कि आपको आठ-दस प्रश्नों में पाँच का उतर देना होगा। साथ ही आपसे पूछे गए प्रश्नों की संख्या इतनी होगी कि निर्धारित समय में आप उत्तर दे सकें।

## सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-05
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-5/टीएमए/2011-12
कुल अंक : 100

**नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

1. संस्कृत आचार्यो द्वारा निरुपित काव्य-हेतु के विषय में चर्चा करते हुए प्रतिभा और कल्पना के साम्य-वैषम्य पर विचार कीजिए। 10

2. भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न संप्रदायों का परिचय दीजिए। 10

3. साधारणीकरण से आप क्या समझते है? संस्कृत आचार्यों के साधारणीकरण संबंधी चिंतन पर प्रकाश डालिए। 10

4. शब्द-शक्तियों का परिचय दीजिए। 10

5. प्लेटो के द्वारा कविता पर लगाए गए आक्षेपों की चर्चा करते हुए उनके महत्व पर प्रकाश डालिए। 10

6. लांजाइनस के प्रमुख आलोचना सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए। 10

7. टी.एस.इलियट की परंपरा और व्यक्तिगत प्रज्ञा संबंधी अवधारणा की चर्चा कीजिए। 10

8. ड्राइडन के आलोचना सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए। 10

9. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिएः 5X5=20
   क) सहृदय
   ख) औचित्य सम्प्रदाय
   ग) मनोवैज्ञानिक आलोचना
   घ) उत्तर आधुनिकतावाद

# एम.एच.डी.–7 : हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान

## सत्रीय कार्य

## (पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–7/टीएमए/20011-12
कुल अंक : 100

**नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1000-1000 शब्दों में दीजिए। 15X4=60

1 भाषा और संप्रेषण के अंतःसंबंधों पर प्रकाश डालिए।

2 भाषाविज्ञान और विकास में सस्यूर के योगदान का उल्लेख कीजिए।

3 अर्थ की प्रकृति और प्रक्रिया को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

4 शैली विज्ञान के स्वरूप और विकास पर प्रकाश डालिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500-500 शब्दों में दीजिए। 10X3=30

1 हिंदी की खंडेतर ध्वनियाँ

2 हिंदी और उसकी बोलियाँ

3 भाषा-शिक्षण और त्रुटि-विश्लेषण

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 250-250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। 5X2=10

1 ध्वनि संरचना

2 बहु भाषिकता का तात्पर्य

# एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास

## सत्रीय कार्य

## (पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-13
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–13/टीएमए/2011-12
कुल अंक : 100

नोटः **निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

1. उपन्यास और यथार्थ के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डालते हुए उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए। 15

2. उपन्यास की कथावस्तु के विभिन्न पक्षों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

3. भारतीय उपन्यास की अवधारणा विषय पर एक निबंध लिखिए। 15

4. राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के संदर्भ में प्रेमचंद के उपन्यासों का मूल्यांकन कीजिए। 15

5. उपन्यास की आलोचना की विभिन्न दृष्टियों का आलोचनात्मक परिचय दीजिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियां लिखिए : 5X5==25
   क) द्वितीय विश्वयुद्ध और यूरोपीय उपन्यास
   ख) यूरोप में उपन्यास विधा का उदय
   ग) नवजागरण और भारतीय उपन्यास
   घ) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास
   ङ) उपन्यास और कहानी

# एम. एच. डी.- 14 : हिन्दी उपन्यास -1
## (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
## सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम एच डी -14
सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी -14/टी एम ए/ 2011-2012
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×4=40

(क) कुछ देर तीनों आदमी चुप बैठे रहे। मदनसिंह अपने भाई को कृतघ्न समझ रहे थे। बैजनाथ को चिन्ता हो रही थी कि मदनसिंह का पक्ष ग्रहण करने में पद्मसिंह बुरा तो न मान जाएंगे। और पद्मसिंह अपने बड़े भाई की अप्रसन्नता के भय से दबे हुए थे। सिर उठाने का साहस नहीं होता था। एक ओर भाई की अप्रसन्नता थी, दूसरी ओर सिद्धान्त और न्याय का बलिदान। एक ओर अंधेरी घाटी थी, दूसरी ओर सीधी चट्टान, निकलने का कोई मार्ग न था। अन्त में उन्होंने डरते-डरते कहा-भाई साहब, आपने मेरी भूलें कितनी बार क्षमा की हैं। मेरी एक ढिठाई और क्षमा कीजिए। आप जब नाच के रिवाज को दूषित समझते हैं, तो उस पर इतना जोर क्यों देते हैं?

(ख) मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे इस आत्म-पतन से बचा लिया। मेरा अपने समस्त भाईयों से निवेदन है कि वह एक महीने के अन्दर मेरे मुख्तार के पास जाकर अपने-अपने हिस्से का सरकारी लगान पूछ लें और वह रकम खजाने में जमा कर दें। मैं श्रद्धेय डाक्टर इर्फानअली से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस विषय में मेरी सहायता करें और जाब्ते और कानून की जटिल समस्याओं को तै करने की व्यवस्था करें। मुझे आशा है कि मेरे समस्त भ्रातृवर्ग आपस में प्रेम से रहेंगे और जरा-जरा-सी बातों के लिए अदालत की शरण न लेंगे। परमात्मा आपके हृदय में सहिष्णुता, सद्भाव और सुविचार उत्पन्न करें और आपको अपने नए कर्त्तव्यों का पालन करने की क्षमता प्रदान करे। हाँ, मैं यह जता देना चाहता हूँ कि आप अपनी जमीन असामियों को नफे पर न उठा सकेंगे। यदि आप ऐसा करेंगे तो मेरे साथ घोर अन्याय होगा, क्योंकि जिन बुराइयों को मैं मिटाना चाहता हूँ, आप उन्हीं का प्रचार करेंगे।

(ग) ये लोग प्रजा को दोनों हाथों से लूट रहे हैं। इनमें न दया है, न धर्म है। हैं हमारे ही भाईबंद, पर हमारी ही गर्दन पर छुरी चलाते हैं। किसी ने जरा साफ कपड़े पहने, और ये लोग उसके सिर हुए। जिसे घूस न दीजिए, वही आपका दुश्मन है। चोरी कीजिए, डाके डालिए, घरों में आग लगाइए, गरीबों का गला काटिए, कोई आपसे न बोलेगा। बस, कर्मचारियो की मुट्ठियाँ गर्म करते रहिए। दिन-दहाड़े खून कीजिए, पर पुलिस की पूजा कर दीजिए, आप बेदाग छूट जाएँगे, आपके बदले कोई बेकसूर फाँसी पर लटका दिया जाएगा। कोई फरियाद नहीं सुनता। कौन सुने, सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। यही समझ लीजिए कि हिंसक जन्तुओं का एक गोल है। सब-के-सब मिलकर शिकार करते हैं और मिल-जुलकर खाते हैं।

(घ) विवाहित जीवन के इन दो-ढाई सालों में कभी उसका हृदय अनुराग से इतना प्रकंपित न हुआ था। विलासिनी रूप में वह केवल प्रेम आवरण के दर्शन कर सकती थी। आज त्यागिनी बनकर उसने उसका असली रूप देखा, कितना मनोहर, कितना विशुद्ध, कितना विशाल, कितना तेजोमय। विलासिनी ने प्रेमोद्यान की दीवारों को देखा था, वह उसी में खुश थी। त्यागिनी बनकर वह उस उद्यान के भीतर पहुँच गई थी- कितना रम्य दृश्य था, कितनी सुगंध, कितना वैचित्र्य, कितना विकास। इसकी सुगंध में, इसकी रम्यता का देवत्व भरा हुआ था। प्रेम अपने उच्चतर स्थान पर पहुँचकर देवत्व से मिल जाता है। जालपा को अब कोई शंका नहीं है, इस प्रेम को पाकर वह जन्म-जन्मांतरों तक सौभाग्यवती बनी रहेगी। इस प्रेम ने उसे वियोग, परिस्थिति और मृत्यु के भय से मुक्त कर दिया- उसे अभय प्रदान कर दिया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 12×4=48

(क) प्रेमचंद के साहित्य संबंधी विचारों का विश्लेषण कीजिए।
(ख) औपन्यासिक शिल्प की अपेक्षाओं के अनुरूप "सेवासदन" के वस्तु-संगठन की स्थिति पर विचार कीजिए।
(ग) "प्रेमाश्रम" में चित्रित तत्कालीन समाज की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
(घ) औपन्यासिक शिल्प के आधार पर "रंगभूमि" का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 4×3=12

(क) "गबन" का रचनात्मक उद्देश्य
(ख) ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर
(ग) प्रेमचंद पर विचारधाराओं का प्रभाव

# एम. एच. डी.- 15 : हिन्दी उपन्यास -2
## सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम एच डी -15
सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी -15/टी एम ए/ 2011-2012
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×4=40

(क) "परन्तु विवाह केवल भावात्मक संबंध नहीं होता, आप मानेंगे। विवाह केवल दो व्यक्तियों का ही संबंध भी नहीं होता। कम से कम हमारे समाज में, यह परिवारों का भी संबंध बन जाता है। आप बुरा न मानें, मेरा विचार है कि आजीवन सब लोगों का विरोध या असहयोग झेलते रहना सुखद नहीं हो सकता। सीधी बात है, कनक आकर्षक लड़की है और कनक ही क्या, बहुत-सी शिक्षित और भावुक लड़कियाँ आपके प्रति आकर्षण अनुभव करेंगी। यह तो सब स्वाभाविक बात थी। साफ बात कहने में हर्ज क्या है ! जीवन में आकर्षण के अवसर तो आते ही रहते हैं पर उसमें जीवन भर के लिए बंधते समय बहुत सी बातों का ध्यान भी रखना पड़ता है। आप यह तो अनुभव कर रहे कि मैं बहुत अधिक अधिकार जता रहा हूँ।"

(ख) कुदरते-खुदाबंदी का यकीन दिलाने के लिए मूसा ने बड़े-बड़े मोजज़े दिखाए। आसमानों को कैसा बुलंद और बाआब बनाया। सूरज के जरिए रात और दिन की तारीक़ी और रोशनी का इंतजाम किया। सतह जमीन को बिछाकर इस पर पहाड़ कायम किए। आसमान से पानी ब़रसाया और जमीन से सब्ज़ा उगाया। सतह ज़मीन की अगर एक वसीह फर्श से मिसाल दी जाए तो इस पर पहाड़ों को ऐसा समझा जाएगा कि गोया फर्श को अपनी जगह रखने के लिए मेखें गाड़ दी हों। आसमानों की हकीकत ख़्वा कुछ भी समझी जाए, मगर उनके वजूद और उनकी मजबूती में किसी को शक नहीं।। आसमानों की हर-एक चीज अपनी मुकर्रा जगह के अंदर निहायत मज़बूती से कायम है।

(ग) ख़ैर, तो माणिक मुल्ला बोले कि, "जब मैं प्रेम पर आर्थिक प्रभाव की बात करता हूँ तो मेरा मतलब यह रहता है कि वास्तव में आर्थिक ढाँचा हमारे मन पर इतना अजब-सा प्रभाव डालता है कि मन की सारी भावनाएँ उससे स्वाधीन नहीं हो पातीं और हम-जैसे लोग जो न उच्च वर्ग के हैं, न निम्न वर्ग के, उनके यहाँ रूढ़ियाँ, परंपराएँ, मर्यादाएँ भी ऐसी पुरानी और विषाक्त हैं कि कुल मिलाकर हम सभी पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि हम यंत्र-मात्र रह जाते हैं। हमारे अंदर उदार और ऊँचे सपने ख़त्म हो जाते हैं और एक अजब-सी जड़ मूर्च्छना हम पर छा जाती है।"

(घ) हमारे इतिहास में-चाहे युद्धकाल रहा हो, या शान्तिकाल-राजमहलों से लेकर खलिहानों तक गुटबन्दी द्वारा "मैं" को "तू" और "तू" को "मैं" बनाने की शानदार परम्परा रही है। अंग्रेजी राज में अंग्रेजों को बाहर भगाने के झंझट में कुछ दिनों के लिए हम उसे भूल गए थे। आजादी मिलने के बाद अपनी और परम्पराओं के साथ इसको भी हमने बढ़ावा दिया है। अब हम गुटबन्दी को तू-तू, मैं-मैं, लात-जूता साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदान्त को जन्म देने वाले देश की उपलब्धि है। यही, संक्षेप में, गुटबन्दी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 12×4=48

(क) यशपाल के उपन्यास साहित्य का परिचय दीजिए।
(ख) "ज़िन्दगीनामा" उपन्यास के परिवेश-चित्रण की विशिष्टताओं की चर्चा कीजिए।
(ग) माणिक मुल्ला की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।
(घ) "रागदरबारी" में प्रयुक्त व्यंग्य के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 4×3=12

(क) "झूठा सच" का महत्व
(ख) "जिन्दगीनामा" की भाषा
(ग) "राग दरबारी" में चित्रित न्याय व्यवस्था

## एम. एच. डी -16 : भारतीय उपन्यास
## सत्रीय कार्य
## (खंड 1, 2 ,3, और 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड - एम. एच. डी -16
सत्रीय कार्य कोड - एम. एच. डी -16/टी एम ए/2011-12
कुल अंक - 100

कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सातवाँ प्रश्न अनिवार्य है। 15×4=60

1. मलयालम में उपन्यास लेखन की परम्परा पर प्रकाश डालिए।

2. "संस्कार" के कथानक का विवेचन कीजिए।

3. "मानवीनी भवाई" में निरूपित ग्राम्य जीवन की समीक्षा कीजिए।

4. विरसा मुन्डा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. चेम्मीन के कथानक का विश्लेषण कीजिए।

6. चन्द्री की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

   1. पन्नालाल पटेल
   2. राजू का चरित्र
   3. प्राणेशाचार्य
   4. नव्य आंदोलन और अनन्तमूर्ति
   5. मुंडा समाज

SOH/IGNOU/P.O. 3.5T/July 2011

Printed at : Raj Printer, A-9, B-2, Tronica city, Loni (Gzb.)